Rohtas Mahila College, SASARAM

Study Material for B.A. Part III

SANSKRIT (Paper VII)

Dr. Savitri Singh,
Associate Professor,
Deptt. of Sanskrit,
R.M.C. SASARAM

Date
28.07.2020

Topic: व्यञ्जना का स्वरूप एवं भेद (काव्यदीपिका अ…)

अभिधामूला व्यञ्जना

अभिधामूला व्यञ्जना के लक्षण के सम्बन्ध में आचार्य विश्वनाथ ने कहा है संयोग आदि की सहायता से अनेकार्थ शब्द के किसी एक प्रासंगिक अर्थ का निर्णय हो जाने पर भी जिसके द्वारा अन्य अप्रासंगिक अर्थ का ज्ञान होता है वह अभिधाश्रया/अभिधामूला व्यञ्जना कहलाती है।

जब अनेकार्थक शब्दों में यह शब्द किस अर्थ का बोधक है, यह निर्णय नहीं होता, तब नीचे लिखे साधनों से उनके अर्थ का निर्णय किया जाता है—(1) संयोग, (2) विप्रयोग (3) साहचर्य (4) विरोधिता (5) अर्थ (6) प्रकरण (7) लिंग (8) अन्यशब्दों की सन्निधि (9) सामर्थ्य (10) औचित्य (11) देश (12) काल (13) व्यक्ति (14) स्वर आदि। ये चौदहों अनेकार्थक शब्दों का जहाँ पर निश्चय नहीं हो पाता, वहाँ विशेष अर्थ का बोध कराते हैं।

संयोगो विप्रयोगश्च साहचर्यं विरोधिता।
अर्थः प्रकरणं लिंगं शब्दस्यान्यस्य सन्निधिः॥

→

लक्षणामूला व्यञ्जना (विश्वनाथ)

लक्षणोपास्यते यस्य कृते तत्तु प्रयोजनम् ।
यया प्रत्याय्यते सा स्याद् व्यञ्जना लक्षणाऽऽश्रया ॥ 10 ॥
(काव्यदीपिका द्वितीय शिखा)

जिस अर्थ की प्रतीति के निमित्त लक्षणा मानी जाती है, वही प्रयोजन है, तथा जिस वृत्ति के द्वारा प्रतीति होती है वह लक्षणामूला व्यञ्जना कही जाती है।

उपासना आश्रयण और विधान पर्यायवाची शब्द है। प्रत्यायन का अर्थ बोधन है। जैसे 'गंगायां घोषः' इस वाक्य में गंगा पद का अर्थ अभिधा वृत्ति द्वारा प्रवाह (जलधारा) जाना गया है। तदनन्तर गंगा में घोषाधारता अनुपपन्न जानकर तट रूप अर्थ का बोध कराकर लक्षणा भी शान्त हो गई। अब शीतत्व-पावन-प्रतीतिरूप प्रयोजन जिस वृत्ति के द्वारा शब्द का प्रवाह रूप अर्थ कहकर अभिधा तथा तट रूप अर्थ कह कर लक्षणा के विरत हो जाने पर जिस शक्ति के प्रभाव से शैत्य एवं पावनत्व रूपी प्रयोजन की प्रतीति होती है, उसे लक्षणामूला व्यञ्जना कहते हैं।

इस प्रकार व्यञ्जना के दो भेद शाब्दी व्यञ्जना और आर्थी व्यञ्जना में शाब्दी व्यञ्जना के भी दो भेद हुए - अभिधामूला एवं लक्षणामूला।

अब आर्थी व्यञ्जना का निरूपण करते हुए आचार्य विश्वनाथ कहते हैं।

वक्तृबोद्धव्यवाक्यानां काकोश्चेष्ट्यादितस्तथा ।
वैशिष्ट्यादन्यमर्थं या बोधयेत् सार्थसम्भवा ॥ 11 ॥

→

वक्ता, बोद्धव्य, वाक्य, काकु और चेष्टा आदि की विलक्षणता के कारण जो शब्दशक्ति अन्य अर्थ का बोध कराती है उसे आर्थी या अर्थसम्भवा व्यञ्जना कहते हैं।

जैसे गतोऽस्तमर्कः सूर्य अस्त हो गये। यहाँ पर वक्ता तथा बोद्धव्य के आस्तिक द्विजाति होने पर यह सन्ध्यावन्दन का अवसर है, इस अर्थ की प्रतीति होगी। ग्वालवालों के वक्ता तथा बोद्धव्य होने पर गायों को लोगों अब घर चलेंगे- यह व्यंग्यार्थ प्रतीत होता है।

अर्थानुसन्धान से व्यंग्यार्थ बोध्य होने के कारण आर्थी व्यञ्जना कही गयी।

—x—